स्नातक तृतीय खण्ड हिंदी प्रतिष्ठा, पंचम पत्र
- प्रो० हरेकृष्ण कामति, [illegible] प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, जे० एन० कॉलेज, मधुबनी

'सिंदूर की होली' समस्या नाटक की कथावस्तु का विवेचन

नाटकीय तत्वों में कथावस्तु सर्वाधिक प्रमुख एवं मूल विधायक तत्व होता है। समस्यानाटकों में कथानक के स्थूल रूप को महत्त्व नहीं दिया जाता है, यद्यपि उसका स्वरूप तो होता ही है। समस्या नाटक के वस्तु विन्यास में कार्यावस्थाओं तथा नाट्य-संधियों की यांत्रिकता नहीं होती है। उसमें समसामयिक जीवन की किसी समस्या के परिप्रेक्ष्य में पात्रों एवं परिस्थितियों के परस्पर घात-प्रतिघात द्वारा कथावस्तु सर्जन किया जाता है।

समस्या नाटक के वस्तु-विन्यास में प्राचीन रूढ़ पद्धतियों - नांदी सूत्रधार, विष्कम्भक आदि प्रयोग नहीं किया जाता है। समस्या विशेष के प्रति पाठक अथवा प्रेक्षक के चिंतन को प्रेरित कर फल की प्राप्ति कराना समस्या नाटक का उद्देश्य होता है। इसी उपलब्धि को ध्यान में रखकर कथानक के आदि, मध्य तथा अंत का विकास किया जाता है। समस्या नाटक की कथावस्तु में संक्षिप्तता के साथ कसाव होता है, उसमें सांकेतिकता सर्वत्र विद्यमान रहती है।

'सिंदूर की होली' सन् 1934-35 में प्रकाशित नाटककार लक्ष्मीनारायण मिश्र की समस्या नाट्य-कृति पचासी पृष्ठों की है जिसमें सात मुख्य पात्र हैं और दो गौण पात्र। नाटक की समस्त कथावस्तु तीन अंकों में अनुस्यूत है। अंकों में दृश्य-परिवर्तन का विधान नहीं किया गया है। प्रथम अंक में नाटकगत समस्याओं का बीजवपन होता है। द्वितीय अंक में समस्या से सम्बन्धित उलझनों का विकास होता है तथा तृतीय अंक में उन पर विचार-विमर्श किया गया है। 'सिंदूर की होली' नाटक के कथानक में सरलता, तार्किकता और अन्विति दिखाई पड़ती है।

यथार्थवादी युग में अनेक समस्या नाटक लिखे गये हैं। इन समस्या नाटकों में प्रायः समसामयिक समस्या पर चर्चा की है। ये समस्याएं दो रूपों में हमारे समक्ष आती हैं - व्यष्टि की समस्याएं और समष्टि की समस्याएं। मुरारीलाल धन लोलुपता के कारण अपने मित्र को भांग खिलाकर नदी में ठेलकर हत्या कर देता है जो उसकी व्यष्टि समस्या है और उस समस्या कारण वह मानसिक दबाव का अनुभव करता है - 'मनोज अगर जान जायेगा कि उसके पिता ने मेरी नज़र से आत्महत्या की थी... (होकर जैसे किसी गहरी चिंता में पड़ जाता है) दस वर्ष का समय निकल गया... अभी तक तो बात

छिपी हुई है। अगर किसी दिन स्कूल गयी तो मेरे मुँह पर स्याही पुत जायगी और मैं किसी काम का नहीं रहूँगा।' मुरारी लाल से सम्बन्धित दूसरी समस्या समष्टि की है। मुरारी लाल समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति है और डिप्टी कलक्टर होने के नाते वह न्याय प्रणाली से जुड़ा हुआ है, वह रिश्वतखोरी से सम्पृक्त है। वह भगवंत सिंह से रिश्वत लेने में तनिक भी शर्म नहीं करता है। वह कहता है – 'ऐं कह दिया लात मारते हैं चालीस हजार... आखिर, मैं समझ नहीं पाता। क्यों न इसमें कोई बुराई है? ले लेने में, और भी एक लुटेरे और हत्यारे से।' 'सिंदूर की होली' में इस नाटकीय प्रतिव्यंग्य के द्वारा भी कथानक के विकास का प्रयत्न परिलक्षित होता है। कथानक की परिणति की ओर संकेत करनेवाला एक कलात्मक नाटकीय प्रतिव्यंग्य है।'

बाल-विधवा मनोरमा मुरारी लाल की बेटी चन्द्रकला को चित्रकला की शिक्षा देती परन्तु मुरारीलाल अपनी बेटी से दो वर्ष कम अवस्था की बाल विधवा मनोरमा को अपने जाल में फँसाना चाहता है तो मनोरमा उससे घृणा करती है। मनोरमा पुरुष की कामी प्रवृत्ति के सम्बन्ध में मुरारीलाल से स्पष्ट शब्दों में कहती है – 'क्षमा कीजियेगा, पुरुष आँख से लालुप होते हैं, विशेषतः स्त्रियों के सम्बन्ध में, मृत्यु शय्या पर भी सुन्दर स्त्री इनके सबसे बड़े लोभ हो जाती है।'

बाल-विधवा का समाज से बचकर अपने वैधव्य का पालन करते हुए जीवन यापन करने का अच्छा तरीका 'सिंदूर की होली' में लक्ष्मीनारायण मिश्र ने दिया है। मनोरमा चित्रकला में अपना मन लगा कर समय व्यतीत किया करती है।

'सिंदूर की होली' में नाटककार लक्ष्मीनारायण मिश्र ने समाज की एक और समस्या का कथानक में समावेश किया है, वह है तलाक की समस्या। वस्तुतः विधवा-विवाह से तलाक की समस्या का समाधान संभव है ही नहीं, क्योंकि अनेक विवाह के कारण तलाक की समस्या उत्पन्न होती। नाटककार ने मनोरमा के इस कथन इस समस्या का समाधान इंगित किया है – 'वैधव्य तो मिटेगा नहीं...... तलाक का आगमन होगा। अभी तक केवल वैधव्य की समस्या थी, अब तलाक की समस्या भी आ रही है।'

'सिंदूर की होली' के कथानक में नाटककार ने स्वगत-कथनों एवं गीतों का प्रयोग नहीं किया है। उन्होंने मूक अभिनयों अथवा मनोवैज्ञानिक मुद्राओं का सहारा लिया है। 'सिंदूर की होली' की वस्तु-योजना का सर्वाधिक वैशिष्ट्य और उसकी उपलब्धि यह है कि इसमें अनावश्यक कुछ भी प्रतीत नहीं होता।

— : 0 : —